unit-2

महाकवि जयशंकर प्रसाद

— शिवपूजन सहाय

Q→ शिवपूजन सहाय का साहित्यिक परिचय ?

⇒ आचार्य शिवपूजन सहाय एक कर्मठ पत्रकार, प्रबुद्ध साहित्य-सेवी और राष्ट्रभाषा के अनन्य उपासक थे। इनकी प्रारंभिक जीवन काशी में बीता तथा इनका लेखन ललित-गद्य-रचना से प्रारंभ हुआ। इन्होंने 'मतवाला' पत्र का संपादन किया। इन्हें हिंदी में आंचलिक उपन्यास का सूत्रपात करने वाला माना जाता है। इस दृष्टि से इनका 'देहाती दुनिया' उपन्यास का उल्लेख किया जाता है। 'वे दिन वे लोग' इनका श्रेष्ठ-काव्य है तो 'दो घड़ी' इनकी अन्यतम हास्य-व्यंग्य रचना है।

'बाबू गुलाबराय' एवं रामधारी सिंह 'दिनकर' ने आचार्य शिवपूजन सहाय के साहित्यिक व्यक्तित्व को उत्कृष्ट बताया है। इनकी भाषा व्यंग्य-विनोद से पुष्ट तथा मुहावरेदार है। इनकी भाषा में माधुर्य और ओज का अपूर्व मिश्रण दिखाई देता है। इनकी शैली परिष्कृत, तर्कपूर्ण तथा परिमार्जित है तथा भाषा भावानुकूल एवं नियमानुसार प्रयुक्त हुई है। इनके द्वारा लिखे गए संस्मरणात्मक रेखाचित्र उत्कृष्ट माने गए हैं। शिवपूजन सहाय का सारा साहित्य प्रायः गद्यात्मक है, जिसमें वर्णनात्मक, भावात्मक, विवेचनात्मक एवं अलंकृत आदि शैलियाँ प्रयुक्त हुई हैं। इन्होंने सामाजिक विषयों पर सुंदर गद्यलेख लिखे हैं। इनका साहित्यकार व्यक्तित्व प्रभावशाली रहा है।

8→ 'महाकवि जयशंकर प्रसाद' पाठ का सार अपने शब्दों में लिखिए ?

⇒ भूमिका :- 'महाकवि जयशंकर प्रसाद' की रेखाचित्र को लेखक शिवपूजन सहाय ने लिखा है। सहाय जी ने जयशंकर प्रसाद को बहुत ही नजदीक से देखा था और इस रेखाचित्र में सहाय जी ने प्रसाद के व्यक्तित्व के अछूते प्रसंगों को रूपायित किया है। उनकी दृष्टि में प्रसाद जी महान साहित्यकार के अतिरिक्त विलक्षण प्रतिभा के धनी थे। इस रेखाचित्र में प्रसाद जी की विलक्षणता को विस्तृत रूप दिया गया है।

आगे हम इस रेखाचित्र पाठ का सार अपने शब्दों में लिखने की कोशिश करेंगे —

सन् 1912 में शिवपूजन सहाय मैट्रिक पास करते ही मुगलसराय चले गए। वहाँ से अजीविका की खातिर बनारस की दीवनी अदालत में नकलनवीस नियुक्त हुए और खजूरी मोहल्ले में रहने लगे। सहाय जी अदालत की नौकरी से छुट्टी मिलने पर काशी-नगरी-प्रचारिणी सभा में भी जाने लगे थे। वह साहित्यिक न होने पर भी साहित्यानुरागी होने के कारण प्रसाद जी को भी जानते थे।

बनारस चौक की कोतवाली के पीछे मस्जिद के सामने नारियरी बाजार में उनकी लगभग सवा सौ वर्ष की पुश्तैनी दुकान जर्दा-सुर्ती की थी। उसके सामने के तख्ते पर सफेदा बिछवा कर वह प्राय: नित्य संध्योपरांत रात्रि में बैठते थे। उसी पर एक कोने में पानवाला भी अपनी चँगेले लिए बैठता था। उसके बीड़े और दुकान के जाफरानी जर्दे का दौर लगभग दस-ग्यारह बजे रात तक चलता

रहता था। हिंदी - साहित्य के बड़े - बड़े धुरंधर महारथी आकर उनसे काव्य - शास्त्र - विनोदेन समय यापन करते थे। जैसे श्री प्रेमचंद, रायकृष्णदास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल आदि साहित्य की शास्त्रीय समस्याओं पर विचार - विमर्श करते थे।

'प्रसाद जी' हलवाई वैश्य थे। अपने हाथों से ही स्वादिष्ट भोजन बनाते थे। भोज आदि में यदि एक सौ अतिथियों को भोजन कराना है तो बादाम, पिस्ते की बर्फी; मेवा और मावा, चीनी, केसर - इलायची कितनी पड़ेगी इसका चिट्ठा भी तैयार करा देते थे और जबानी ही बोलकर लिखवाते थे। अपने घरेलू व्यवसाय के लिए जर्दा, किमाम, इत्र आदि अपनी ही देख - रेख में बनाते थे।

'प्रसाद जी' बनारस के पुराने रईसों, पंडितों, नर्तकों, गुण्डों, गायिकाओं की बहुत सी अद्भुत कहानियाँ सुनाया करते थे जो मनोरंजक होने के साथ - साथ शिक्षाप्रद भी होती थी और अतीत युग के गुणी और कलावंत का पता चलता था। 'प्रसाद जी' अपनी जवानी में कुश्ती भी लड़ चुके थे। उनका कसरती शरीर बड़ा ही गठीला था और उन्होंने मल्ल-विद्या का भी अध्ययन किया था और उन्हें दाव - पेंच के बहुतेरे नाम भी याद थे।

सहाय जी कहते हैं इस निर्मम संसार ने जीते - जी न 'प्रेमचंद' को परखा न 'प्रसाद जी' को और न 'निराला' को ही जब ये संसार से चले गये तब इनके गुणगान के साथ यह अनुभूत होने लगा कि साहित्य - क्षेत्र में ये अमोघ- मेधा - शक्ति लेकर आये थे। 'प्रसाद जी' की जो अवज्ञा और उपेक्षा हुई वह किसी से छिपी नहीं है। प्रसाद जी के कारण कविता, उपन्यास, नाटक, निबंध आदि का आज गौरव अनुभव

किया जा रहा है। प्रसाद जी कभी किसी कवि - सम्मेलन में नहीं जाते थे। मित्र - गोष्ठी में सस्वर कविता - पाठ करते थे। लेकिन एक बार इनको सार्वजनिक समारोह में कविता - गान करना पड़ा था। हिंदी शब्द सागर के संपादकों का सम्मान करने का जो आयोजन हुआ था और उसके साथ जो कवि - सम्मेलन हुआ उसके अध्यक्ष थे प्रसाद जी के साहित्यगुरु महामहोपाध्याय देवीप्रसाद शुक्ल कविचक्रवर्ती। आचार्य श्यामसुंदर जी के आग्रह पर भी जब 'प्रसादजी' कविता - पाठ करने को तैयार न हुए तब उनके गुरु के अध्यक्ष पद से आदेशानुसार उन्हें कविता गान करना पड़ा। उनके ललित - माधुर्य कंठ - स्वर से सारी सभा मंत्र - मुग्ध हो जाती थी। अपनी कविता गाते समय वह स्वयं भी भाव - विभोर हो जाते थे।

'प्रसाद जी' छायावाद और रहस्यवाद के युग में उत्पन्न हुए थे। खड़ीबोली हिंदी में ही कविता करते थे किंतु प्राचीन ब्रजभाषा - काव्य में भी मर्मज्ञ थे। पुरानी कविताएँ काफी कण्ठस्थ थी। ब्रजभाषा - साहित्य के बड़े अनुरागी और प्रशंसक थे। 'प्रसादजी' की नाव पर उनके साहित्यिक बंधु भी संगीत का आनंद लूटते थें। काशी की सुप्रसिद्ध गायिकाएँ सूर और तुलसी के विनय - पद जब गाने लगती थी, तब प्रसाद जी भाव - विह्वल हो उठते थे। उस समय काशी में हिंदी साहित्य के धुरन्धर महारथियों का बड़ा अच्छा जमघट था सबके साथ प्रसाद जी का संबंध था। एक बार 'प्रेमचंद' जी ने अपने 'हंस' में उनके ऐतिहासिक नाटकों पर संपादकीय मत प्रकट करते हुए लिख दिया था कि 'प्रसादजी' प्राचीन इतिहास के गड़े मुर्दे उखाड़ा करते हैं। इसके बाद भी 'प्रसादजी' 'प्रेमचंद' जी के साथ बैठकर साहित्य चर्चा में लगे रहते थे। दोनों महारथियों में कभी किसी प्रकार का मनोमालिन्य अथवा वैमनस्य नहीं हुआ। वे अपने मन में किसी के प्रति कोई राग - द्वेष नहीं रखते थे। उनकी

तीव्र आलोचना करने वाले सज्जन भी उनके पास पहुँचकर यथोचित आदर - मान ही पाते थे।

'प्रसादजी' के घर पर दरवाजे के ~~सामने~~ सामने ही शिव - मंदिर था और फाल्गुनी महाशिवरात्रि को महोत्सव हुआ करता था। उनके परिवार की यह पुरानी परंपरा थी। अधिकतर साहित्यिक - सेवियों का ही समागम होता था। इसी प्रकार अपने वंश की मर्यादा का निर्वाह वह प्रत्येक पर्व पर करते थे। होली, दीवाली, दशहरा पर उनके परिवार की पुरानी प्रथा का पालन होता था। 'प्रसादजी' को देखते ही अनेक काशी - निवासी 'हर - हर महादेव' कहकर प्रणाम करते थे। 'प्रसादजी' बड़े धनी घराने में पैदा होकर भी अपने चरित्र के प्रभाव से अजीव्न अधिकारी बने रहे।

- निष्कर्ष → अतः निष्कर्ष यह कह सकते हैं कि 'महाकवि जयशंकर प्रसाद' नामक रेखाचित्र प्रसाद जी की ही व्यक्तित्व का केंद्र बिंदु है। सहाय जी ने प्रस्तुत रेखाचित्र में 'प्रसादजी' की जीवन से जुड़ी हर छोटे से छोटे और बड़े से बड़े सभी बातों को हमारे सामने रख दिया है।

• लघूत्तरात्मक प्रश्न —

1. प्रसादजी की पुश्तैनी दुकान पर किन - किन साहित्यकारों द्वारा किन - किन विषयों पर विचार विमर्श होता था? स्पष्ट कीजिए।

⇒ प्रसादजी की पुश्तैनी दुकान पर कलाविद् रायकृष्णदासजी, श्री प्रेमचंद, महाकवि रत्नाकर, प्राध्यापक लाला भगवान दीन, आचार्य रामचंद्र शुक्ल आदि साहित्यकार साहित्य की शास्त्रीय समस्याओं पर विचार - विमर्श और भाव - विनिमय करते थे; रायसाहब प्राचीन भारतीय शिल्पकला और मूर्तिकला पर, लाला भगवानदीन शब्दों की व्युत्पत्ति और निरुक्ति पर, रत्नाकर जी ब्रज भाषा - साहित्य की बारीकियों पर, आचार्य शुक्ल जी संस्कृत - साहित्य की विविध प्रवृत्तियों पर तथा प्रेमचंद जी कथा - साहित्य के मनोवैज्ञानिक पक्ष विचार करते थे

2. 'प्रसादजी की स्मरण शक्ति बड़ी विलक्षण थी।' उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए ?

⇒ 'प्रसादजी की स्मरण शक्ति बड़ी विलक्षण थी।' शालिहोत्र और आयुर्वेद - शास्त्रों के महत्वपूर्ण प्रकरणों का प्रवचन सुनाते थे हाथी, घोड़ा, गाय आदि के शुभाशुभ के प्रभाव का वर्णन भी सुनाते थे इसी प्रकार हीरा, मोती मूँगा आदि रत्नों के गुण - दोषों के प्रभाव का वर्णन भी शास्त्रीय प्रमाणों के साथ करते थे। इन सब गुणों के कारण कहा गया है कि उनकी स्मरण शक्ति बड़ी विलक्षण थी।

3. साहित्यकारों के जीवन की विडंबना को अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

⇒ साहित्यकारों के मृत्यु के पश्चात ही उनके साहित्य की श्रेष्ठता का पता चलता है। साहित्यकारों के जीवन की विडंबना है कि वे जिस सम्मान के हकदार होते हैं वे उनको जीवित रहते प्राप्त नहीं होता है उल्टा उन्हें आलोचना का शिकार होना पड़ता है। जिस प्रकार इस संसार ने जीते - जी न प्रेमचंद को परखा न 'प्रसादजी' को और न 'निराला' को ही। जब वे संसार से चले गये तब इनके गुणगान के साथ यह भी अनुभूत होने लगा कि साहित्य - क्षेत्र में ये अमोघ मेधा - शक्ति लेकर आये थें। जगत की यही परंपरागत रीति जान पड़ती है कि वह युग की विभूति को उसके विलीन हो जाने के बाद ही पहचानता है।

4. उनकी तीव्र आलोचना करने वाले सज्जन भी उनके पास पहुँचकर यथोचित आदर - मान ही पाते थे। उदाहरण द्वारा स्पष्ट कीजिए।

⇒ प्रसाद जी की तीव्र आलोचना करने वाले सज्जन भी उनके पास पहुँचकर यथोचित आदर - मान ही पाते थे। उदाहरणत: एक बार प्रेमचंद जी ने अपने 'हंस' में उनके ऐतिहासिक नाटकों पर संपादकीय मत प्रकट करते हुए लिख दिया था कि 'प्रसाद जी'

प्राचीन इतिहास के गड़े मुर्दे उखाड़ा करते हैं। इसके बाद भी 'प्रसाद जी' 'प्रेमचंद जी' के साथ बैठकर साहित्य चर्चा में लगे रहते थे। दोनों महारथियों में कभी किसी प्रकार का मनोमालिन्य अथवा वैमनस्य नहीं हुआ। प्रसाद जी अपने मन में किसी के प्रति कोई राग-द्वेष नहीं रखते थे।

• <u>निबंधात्मक प्रश्न :-</u>

1. शिवपूजन सहाय के 'महाकवि जयशंकर प्रसाद' रेखाचित्र के आधार पर प्रसादजी के व्यक्तित्व की विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए?

→ आचार्य शिवपूजन सहाय ने 'महाकवि जयशंकर प्रसाद' रेखाचित्र में प्रसादजी के व्यक्तित्व की अनेक विशेषताओं का वर्णन किया। उनके व्यक्तित्व का निरूपण इस प्रकार है —

1. <u>महान साहित्यकार</u> :- प्रसाद महान् साहित्यकार एवं महाकवि थे। उन्होंने नाटक, उपन्यास, महाकाव्य आदि की रचना से हिंदी साहित्य के भंडार को भरा।

2. <u>प्रतिभासंपन्न व्यक्तित्व</u> :- प्रसाद अनुपम प्रतिभा संपन्न थे। उन्होंने अपनी रचनाओं तथा अन्य कार्यों में विशिष्ट प्रतिभा का परिचय दिया।

3. <u>कला-मर्मज्ञ</u> :- प्रसाद अनेक कलाओं के मर्मज्ञ थे। वे काशी की विशेषताओं के विशेषज्ञ थे। पाककला के ज्ञाता और अपने व्यवसाय में कुशल थे।

4. <u>सर्वशास्त्रज्ञ</u> :- प्रसाद की भारतीय शास्त्रों में, आयुर्वेद, शालिहोत्र, वेद, उपनिषद् एवं संस्कृत साहित्य के सभी अंगों में गहन गति थी।

5. <u>लोकज्ञान से संपन्न</u> :- प्रसाद जी को विभिन्न व्यवसायों की पारिभाषिक शब्दावली और विविध बोलियों का गहन ज्ञान था।

6. व्यवसाय में कुशल :- प्रसाद अपने पैतृक व्यवसाय में कुशल थे तथा किमाम - इत्र आदि को बनाने में दक्ष थे।

7. स्वाध्यायशील :- प्रसाद विद्याव्यसनी थे और रात्रि में स्वाध्याय में निरत रहते थे। स्वाध्याय से ही उन्होंने सभी शास्त्रों एवं कलाओं का ज्ञान प्राप्त किया था।

Q2 -> शिवपूजन सहाय की दृष्टि में प्रसादजी महान् साहित्यकार के अतिरिक्त और भी बहुत कुछ थे। स्पष्ट कीजिए?

=> 'महाकवि जयशंकर प्रसाद' शीर्षक रेखाचित्र में शिवपूजन सहाय ने बताया कि प्रसाद महान् साहित्यकार एवं महाकवि थे। इसके अलावा वे विलक्षण स्मृति - शक्ति से संपन्न थे। वे स्वजातीय गुणों से युक्त और अनेक कलाओं के मर्मज्ञ थे। काशी की सभी विशेषताओं के भी विशेषज्ञ थे। वे काशी के पुराने रईसों, पंडितों, नर्तकों, लावनीबाजों एवं गायिकाओं आदि सभी की कहानियों के ज्ञाता थे। वे धर्मात्मा प्रवृति के थे। व्यापारियों, मल्लाहों, सुनारों आदि की बोलियों और पशु - पक्षियों के लक्षणों के ज्ञाता भी थे।

प्रसाद की वैदिक वाङ्मय और प्राचीन इतिहास में गहरी पैठ थी। संस्कृत साहित्य के प्रमुख अंगों का अध्ययन मनन करने में वे सदैव तत्पर रहते थे। शालिहोत्र एवं आयुर्वेद शास्त्र के महत्वपूर्ण प्रकरणों को लेकर सुंदर प्रवचन देते थे। उन्हे मोती, हीरा आदि रत्नों के गुण - दोषों का पूरा ज्ञान था। इसी प्रकार किमाम - इत्र आदि के निर्माण में दक्ष थे। काष्ठौषधियों और जड़ी - बूटियों के ज्ञान में वैद्यक ~~ग्रंथ~~ ग्रंथ के श्लोक उपस्थित कर देते थे। इस प्रकार प्रसाद लोक - ज्ञान से संपन्न महापुरुष थे।

Q3→ प्रसादजी के परिवार में त्योहारों को किस प्रकार मनाया जाता था? स्पष्ट कीजिए। वर्तमान में त्योहार मनाने के तरीकों में क्या परिवर्तन आया है? स्पष्ट कीजिए।

⇒ लेखक बताता है कि प्रसादजी के घर के सामने स्थित शिव मंदिर में महाशिवरात्रि को महोत्सव आयोजित करने की उनके परिवार की पुरानी परंपरा थी। उसमें शास्त्रीय संगीत का आयोजन होता था और अधिक साहित्य-सेवी उस उत्सव में सम्मिलित होते थे। श्रावणी पूर्णिमा अर्थात रक्षाबंधन का त्योहार वे बड़े उत्साह और उदारता से मनाते थे। उस दिन प्रसादजी चाँदी और ताँबे के सिक्के दक्षिणा रूप में देते थे। प्रसादजी के परिवार में त्योहार पूरी मर्यादा एवं परंपरा के अनुसार मनाये जाते थे उनमें भव्यता के साथ पवित्रता और आस्था का भाव रहता था। होली, दशहरा, दीवाली आदि सब विधिवत् होता था।

वर्तमान काल में त्योहारों को मनाने की पुरानी परंपरा लुप्त हो रही है। अब त्योहार मनाने के तरीकों में कुछ परिवर्तन आ गया है। लोगों के पास समय की कमी और आस्था का अभाव है, प्रत्येक काम में ढोंग और दिखावा है। त्योहारों पर नौटंकी चलती है, फिल्मी गीत बजते हैं और अच्छे खान-पान ज्यादा जोर दिया जाता है। इस प्रकार अब त्योहार मनाने के तरीकों में काफी परिवर्तन आ गया।

- Short Question & Answer

1. प्रसाद जी की पुश्तैनी दुकान कहाँ पर थी?

⇒ नारियरी बाजार में थी।

2. प्रसाद ने किस पत्रिका का संपादन किया था?

⇒ इंदु।

3. प्रसादजी ने किस अवसर पर कविता-पाठ किया था?

⇒ कोशोत्सव - स्मारक के अवसर पर।

4. काशी में उनसे लाभान्वित होने वाले लोग उनके परिवार को क्या नाम देते थे?

⇒ दरबार।

5. प्रसादजी हिंदी खड़ीबोली के अलावा किस भाषा के मर्मज्ञ थे?

⇒ ब्रजभाषा।

6. शिवपूजन सहाय काशी नागरी प्रचारिणी सभा में क्यों जाते थे?

⇒ नागरी प्रचारिणी सभा में हिंदी के कवि आते थे, हिंदी से प्रेम रखने के कारण शिवपूजन सहाय वहाँ पर जाते थे।

7. लेखक की रहने की व्यवस्था किसने, कहाँ पर की थी?

⇒ लेखक के बड़े साले ने उनके रहने की व्यवस्था मुनसरिम शिवप्रसाद द्विवेदी के घर खजुरी मोहल्ले में कर दी थी।

8. राय कृष्णदास जी प्रसिद्धि किस कारण थी?

⇒ प्राचीन भारतीय शिल्पकला एवं मूर्तिकला के पारखी कलाविद् होने से राय कृष्णदास जी की प्रसिद्धि थी।

9. प्रसाद जी को किसके लच्छेदार वाक्य कंठस्थ थे?

⇒ प्रसादजी को वैदिक ऋचाओं और उपनिषदों के लच्छेदार वाक्य कंठस्थ थे।

10. प्रसादजी किन ग्रंथों के मौखिक उद्धरण सुना देते थे?

⇒ प्रसादजी शालिहोत्र, आयुर्वेद एवं हीरा, मोती मूंगा आदि रत्नों के गुणदोषों के शास्त्रीय प्रमाणों के मौखिक उद्धरण सुना देते थे।

11. अपने व्यवसाय के संबंधित किन चीजों के निर्माण में प्रसाद पूरी तरह दक्ष थे?

⇒ प्रसादजी अपने व्यवसाय से संबंधित जर्दा, किमाम, इत्र आदि के निर्माण में पूरी तरह दक्ष थे।

12. प्रसादजी कब वैद्यराज प्रतीत होते थे?

⇒ काष्ठौषधियों और जड़ी-बूटियों के गुणों का वर्णन करते समय वैद्यक ग्रंथों के श्लोक कहने पर प्रसादजी वैद्यराज प्रतीत होते थे।

13. बनारस में काशी - नरेश को क्या प्रतिष्ठा प्राप्त थी?

⇒ बनारस के लोगों द्वारा 'हर हर महादेव' मात्र कहकर करबद्ध प्रणाम करने की प्रतिष्ठा काशी - नरेश को प्राप्त थी।

14. प्रसादजी के परिवार की काशी में क्या प्रतिष्ठा थी?

⇒ प्रसाद के परिवार की काशी में बहुत प्रतिष्ठा थी, उनसे लाभान्वित होने वाले लोग उनके परिवार को 'दरबार' नाम से पुकारते थे।

15. काशी में होली के बाद कौन - सा महोत्सव होता था?

⇒ काशी में होली के बाद गंगा की मध्य धारा में 'बुढ़वा मंगल' का महोत्सव होता था।